

नु॥ तं हं पाति स्या ही करे वै देो सा हि ज ह नु ॥ २ ॥ सा
हि व डो क वि मुख त न कु क्यो गु न व र नै जां हिं ॥ ज्यो
तारे स व ग ग न के म्ठी में न स मों हि ॥ आ जिन पुरुष
निके बं स में नु प जे सा हि ज ह नु ॥ तिन सा हि व के
ना म को श्र व रु चि करे व यो नु ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ प्रथम
मा र ते म् र ली यो सा हि व किरा नु प र्ज ॥ ता को मी रां

पदुबहु रिमहाकविराई ॥२॥ श्रीराम ॥ विप्रग्यातीय
रनगरको बासी है कविराज ॥ तासों साहिमया करै स
दागरी वनिवाज ॥ जवहं कविके मनबल्यौ नवयह
कियो विचार ॥ वरननायिकानाथ कतिकि यो ग्रंथ वि
स्तार ॥ सुंदरकरतसिंगार है सकल रसनि कौ सार
नांमधस्यौ या ग्रंथ कौ प्रति सुंदर संगार ॥ जो सुंदर
सिंगार कौ पढ़ै गुनीसज्ञान ॥ तिनमानौ संसारमें कि
यो सुधारसपांन ॥ ३ ॥ संवत सोरहसैबरषवति श्रुठ
सीति ॥ कातिक सुदशदिगुरौ ग्रंथ रच्यो करि प्रति ॥

५॥ सिंगाररसवर्णनं॥ नवरसमें सिंगाररस समते नी
को आदि तो मैं नाका नायक वरनत है प्रवतादि ३ सो
पुनि सुंदर कवि कहै नी निभोतिकी नारि स्वकीया पर
की प्रवरसामानिका विचारुध स्वकीया कहिये आ
पनी परकीया पर नारि सामानिका तासों कहें जो कें
धनसों द्वारा १॥ स्वकीया लहें ॥ ए लहए स्वकीयनि
के वरनत है कविराज ॥ पतिकी प्रतिसेवा करै साल
मुघाइ जाजा ॥ ६ ॥ कविज्ञा देखा तनै नके को ननि लो
अधरा निहो मैं मुसकानि को धानों ॥ दोलति वोल सु

कंठहोमैं चलनें पगपेन कहें अहरात्रों ॥ सुंदर रोसनही
सपनें अहजौ न यौ नौ मन होमैं विलानों ॥ हौं वसुधा
वसुधाई सबे प्रनिया की सुधाई सुधाई हजानों ॥ ७ ॥
दोहा ॥ सोई स्वकीया ना निविद्य कहै महा कविराज
॥ मुग्धा मध्या प्रचावर नों तीन वनाई ॥ ८ ॥ मुग्धा ल
॥ जाके तन जोवन फलके फलके कछु कप्राइ ॥
तासों मुग्धानायक कहै महा कवि राइ ॥ कवि
॥ ॥ चिल क्यो अवचाहत है तन सुंदर जोवन जोत
निकीचिनगी थिरताई की आवनिषावनिमें पुनि

चंचलता किडगैयोडगी॥ वतिया नि की यों धुनि पाव
ति हों मु घनें नि कसी कि मु घा सों पगी॥ जिन अं धनि स्
घे ही देखत ही प्रवने अ धियं तिर छं न लगी॥ १०॥
अज्ञात जो वना ल छं ॥ दोहा ॥ सो मु ग्या है नां ति
की पंडित करत विवेक ॥ कही एक अज्ञात यों वना
ज्ञात जो वन एका ॥ ११ ॥ अ पने तन में जो वन प्रा यो अं
न ही ज्ञां नत वा ला ॥ ता ही कहत अज्ञात जो वना सुंद
र गु न ही रसा ल ॥ १२ ॥ कवि त्त ॥ धाई सो जाई कैं धाई
कछु क ह्यो धाई कैं पछी ए कों बनें ठई हे ॥ वे ढिर ही नि

हचिंतकहसुनिमोहि सवैसुधिभरलिगईहैं सुंदरदे
 छिडरातभईनुपजा नुरमांरुनुपाधिनईहै काचा
 कलीसीही कलिषरौश्रवछोटी सुपारीसी आजुभई
 हों ॥१३॥ ज्ञानजोवनालक्षणं ॥ देह ॥ जोवनप्रपने
 देहमें शायोज्ञानेवांमः कवि सुंदरतासों कहैं ज्ञान
 योवनानांमः ॥१४॥ कविज्ञा ॥ छतीनितंवलवैदुलही
 कीश्रालीनिहकीमनसाललचांती ॥ सुंदरजोवनरु
 पसराहतसुंदरिअंधिनहमेंलजांती ॥ डीठिवचाइ
 सखानिकीज्यौंवहदेहकों देखिहाएमुसकानी ॥१५॥

॥ अथ नवोटा लक्षणं ॥ देहा ॥ मुग्धापनं भैव्याही ॥
एकही एनोटाताहि ॥ सकुचतडरपतिरतिकथासुनी
ननोवेजाहि ॥ एनवोटाकीरितियहनवभ्रुषनका
चाहा ॥ लाजकरतं श्रेषा ॥ तसे कोकरिसंकेसराहा ॥ ७ ॥
कविता ॥ जाकेरूपशोभेरूपकोरतीकलांगेतिलुभ
रिछविकीतिलोतमानतूलहैं ॥ सुंदरनवेलीअलव
लीनडेदुलहनिशंगशंगरंगरंगपहरेंदुकूलहैं ॥ ८ ॥
नकमनकहोतभ्रुषनवनकर्वनेकनकवरनतचपे
कोसोफूलहैं ॥ आलिनिकाओटिदेंकेचकचकहग

देकेंदुरिदुरिहोरिहोधिजातदुलहे ॥ १ ॥ चयेनतहेंदुलह
 निमुंदरसहलीसाथसोनेकसीवेलीअलवेलीसीवध
 नईआपसमेंसखिसत्रसरहतताहिघाईकह्योडीठि
 मलागिजाईकेंरहोदई ॥ नवमीसघालिकह्योव्याल
 हीमेंआएलाललिहिकालवहवालअसेहालहेनई ॥
 अथोंनरिघाईमुखपीरीपरिघाईवोंकिचिरियाकी
 नाईआजिभौनकौनमेंगई ॥ २ ॥ नवोताअंतरपुरव
 ॥ गौनेकीरातकेभोरहकौनमेंवैठिरहीदुलहीअन
 वोलें ॥ छातीसोंहाथछिपायकेंसुंदरनारिनवाडड

एकपोलें। देखन कैं। सुरि आं ई सवे तिय नंद जिहां ना
करै जु कलौलें। एकहसे एकवां हगहे इक अंबर अंचि
कें छं घट खोलें। २०॥ अथ विश्वचून वोटा लछिनं।
दोहा॥ सकुचवहन डरछे टोरं वकुपति सौं ने कुपलाई
ना सौं पुनि विश्वचून वोटा कहै महा कविराई। २१॥ पग
सौं पगपिदुरी पीदुरी सौं गहि सुंदर जां घनि जोरि रही
कुच दोऊ टके कर एकहि सौं कर एक सौं छं घरी गा
टी गही। इह जां निल एडर छं पतम कैं सग सोचतें हैं
जडहा डलही। अति हों जु गई छुषिका सी छुवि देखि

॥ कविता ॥ जो फिर कसे दिदे तो हे विद्युरन समझती
 जागीर ही जाज जागत है प्रति ही ॥ अथै मृदिर हा
 य मूरति न देषी जाई खोलत ही खोली यत धूं घ
 रास कति ही ॥ पाय पासि परे के लिके रे अंग नरे तऊ
 सो चत ही राति जाति एसी जई गत ही ॥ सुंदर यों कां
 मके संको चकैं जु ठी चवाम मन सा ज्यों लाए होति
 प्रति कुमति ही ॥ २५ ॥ मध्या अंत सुदता ॥ काल जु
 ठी रत्न के लिके यें कवि सुंदर सोहत अंग रसों हैं
 ॥ प्रारसों में मुघ देषि संको चनि सोचन लोचन हो

नलजोहें॥ नालहसेइहवाचिरहिलननापियकौंत
 किंकैतिरहोंहैं॥ पोंछिकपोलअंगोछतिहोठअमें
 रतिअघेंपरोरतिनौहैं॥ २५॥ प्रोहावर्षनाः दो
 हाः कांमकेलिमेंअतिचनुरपतिसौरतिसौंप्राति
 सोईप्रोशनाइकाजाकैहैयहरति॥ २६॥ कवित्त
 काहृअलिगनआसनचुंवनकीनेअनकनेकौंन
 गिनावै॥ औंरतिमानैनियाकौंतअपतिकीछातीया
 छिनुछोडानभावे॥ मोरभयोतियजानैतजीसौं
 इतेपरएचनुरइवजावे॥ अंचरसौंठकिमोतीकी

मालकौ सुंदरसीतलताईदुरावै॥२॥ प्रौढाश्रंतसुर
ना॥ कवित्त॥ रसरंगभरीअगंगप्रियाणीनुसोइग
एसुषलेसुषदै॥ इहंवीचिजगहरिज्जुघरेअंगिया
परडीठिगईपरकै॥ कुचनुपरदेव्योनखक्षतसुंदर
आठकौअंकसुअैसैलसो॥ मनोहुमनमत्यकैहाथा
चट्योहेमहावतजोवनअंकुसैले॥२॥ सोवतिही
रतिकेलिकरंपतिसंगवायाअतिहीसचुपाणादि
वैसरूपसंघीसवसुंदररीफिरहीठगसीठगजाए
कंचुकीचोवालापोकुचनुपरकूटिरहीलटयों

छवि छाये ॥ वै देहें उदि मनौ गज घालि महे सभु जंगनि अ
गला ए ॥ ३० ॥ अथ मध्याध्याये ॥ मध्याध्याये मान करे
जव तब ही एगुन लछुन लजै ॥ धारा एक प्रधी रादु जै
धीर प्रधी राता जौ ॥ ३१ ॥ धी सत नम ॥ कौन ह एक र
मजने निजरि सहोई जनाई ॥ धी रा कौ लछुन डूहे कहै
महा कवि सई ॥ ३२ ॥ मध्याध्याय नायकाता कहै यहरी
ति ॥ जाके वचन नमैं कछूरि सकी होय प्रतीति ॥ ३३ ॥
कविता ॥ अहो मेरे मया कर मोहन मो कौनौ मनौ
महानिधि बसई दूठी ॥ राजका वान कदे घत सुंदर सो

ऋमिलेति य हो य जु रूटी ॥ कैसी वि रा जति न्ना की नई क
 र की भ्र ग रा में भ्र नू प भ्र गू टी ॥ प्यारे क हो ह सी प्यारी सों
 यों त व तेरी सों तें समुझ सब रूटी ॥ ३५ ॥ मध्या भ्र घी रा
 ॥ बोले बोल क ठोर प्रति जो नें को प दुरा ड ॥ मध्या धा रा
 कहत हैं ता ही सों क वि रा र्श ॥ ३५ ॥ कवि ज्ञ ॥ सां रूप रें व
 छ रा नि च रां डे कें प्रा डे कें वा हर कों फि रि जागे ॥ कल्हि
 ग रा च लि वा हि ग ली म ही सुं दर आ छे व ना य कें वागे ॥
 भ्र नु तो लो च न भ्रै सैं हैं ला ल न मा नों म ज्ञा ठे के रं ग भ्र
 पागे ॥ ला ज न जी ड र ड रि दि यों नु म तो ह क ल ट पार

नलगे ॥ ३ ॥ मध्याधीरा प्रथी ॥ कछुदुरै उधरै कछु
प्रगटकरै जो मान ॥ मध्याधीरा प्रथी रा सुंदरता हिव
षान ॥ ३ ॥ यचिते ॥ उठि प्रादरकी नों पाया विध प्र
ये उनीदक हंरानेके सुषते ॥ दग मोरं प्रौ नौ हैं मार
कहं न जना यौ कछु रसना सुषते ॥ चकि कै दि गदै दग
भीतर और कों सुंदर अंतरके दुषते ॥ प्रविधां नरिवा
त कछु सषासों कहि वे कों नई न कहा सुषते ॥ ३ ॥ ६
प्रौटाधी रा दोहा ॥ काहमि सकरि को पको कामनिक
रै प्रकास परति कों रूषा द्वैर है कहि प्रौटाधी रा स ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥ आवत हो आ दर सों नुठि आई आ गें ल रामा ठेवे
ल सुंदर जना यो ने ह जिय सों ॥ वै ठरे ले से ज परि आ प्र न ठ
सरि वै ठा त हं क हो लाल आई लाणी मेरे हिय सों ॥ सुनिय
ह भौ हैं चंटा इ स तरा इ नैन क छु भे स घा लि छी जी का हू
ए क ति य सों ॥ त व जा इ जानी जब पास चा म मु स का हू
नी ना हा स घा सों रि सा नी हे पिय सों ॥ ध ॥ प्रौ टा प्र धी
रा ॥ सह पर ध न इ क नि र धि जा कै प्रति रि स हो इ ॥ धि
जि कै दे इ न रा ह नों प्रौ टा घी रा सो इ ॥ ध ॥ कवित्त ॥ टिग
वै ठ त हो सुंदर वै ठे गा ए जि ने क नि स ने ह फं द्रा फ सी ए

वनीयानिहिकेंवनीयासुनिहोवृत्तियांलगिऔरनिकोंव
साए॥हसिमोसोंहहाहसिलेवोकहाहसिआएजहांवत
हंहसिए॥रिऊवारिनितो॥रिऊवारनहैजैरिमावतहै
तुमसेरसाए॥ध्रुवजसातजसातलगेतहीगातकि
तौतुत्तरतहीवोलतहं॥कविसुंदरकुल॥दृष्टोरसु
कोंसुइतपरसोंहकरैअजहं॥तिनसोंवकहाकहा
एजिनकेसपपनेहंनलाजभईकवहं॥जगमेंहैषीऔ
षटहैंसवकोंपेसुभाइकीऔषटिनाहीकहं॥ध्रुवऔ
ठाहीसअधीसादोहा॥धोरजघरैअधीरजहिक

रे नृपिय सौमं नाश्रोटा धीरा धीरा सुंदर ताद्विषयान् ॥
धृ॥ कवित्ता ॥ अ एक हं रतिमानि विहारी निहारि
कैप्यारी कछु न क ह्यौ है वैठि रहे दिग मारे न ही ह्य
धीरज सुंदर गादोग ह्यौ हैं ॥ कां न ध सौ कर कामि
निके उर अं सुन कौ पर वाह व ह्यौ है ॥ ऊच नु सा
सले बौ ली है यों हम सौ तुम सौ रस कौ न र ह्यौ है
धृ॥ ज्येष्ठ क निष्ठा वर्ण नं ॥ दोहा ॥ जा सौ पति
अति हित करे निय जु जेष्ठा तादि ॥ धृ॥ जा सौ ध
रदि नु नाह कौ कहत क निष्ठा तादि ॥ धृ॥ अग्ले

१
विष्णुने कहा है नवयसते न विचारः प्यारे ही के पार
पर सब ही यह ओहारा ॥ धटा क विता ॥ प्रापसमें मंदि
र ही बैठा दो कुसों तें रमें ति ही समें आइ का न्हा ए इव
बोल कहें हैं ॥ एक सों क हो कि प्रागै आनु आंघिसुदि
खे लें या ही मिसिवा की दो नों आंघिसुदि रहें हैं ॥ तो
लौं नर सुंदर पकर प्रक मरिवा कों प्रचर कौ पांन
करि गाटे कुच गहें हैं ॥ आली हों अचं नै र ही लाल के
एष्या ल दे धि दे या इ नवान न के नें प्रसेव ह व हें हैं ॥
५१ ॥ अरु अरु की या ॥ अरु ॥ दुरै दुरै पर प्रहय सों सुंद

करजुप्रीता वहनचनु राईवुछैमैपरकीयाकरीति।५०।
 कविता।चैनकहेसुनेकौनचैनपावेसुंदरह्यांमैंकहंके
 निरखेतेनै।नहरियतहो।ओरांनीजिठांनीसासुननद
 वसैं।प्रासपासनासहकौं।कचैउसासतरियतहैं।वे
 टे।मोनकौंनमैंकहोहै।थातएकनुसकेसेकेवेकान्ह
 केवयांनकरियतहै।अवहीधवावचलजैहै।उपर
 हो।माईगोकुलमें।फूंकिफूकिपावधरियतहै।५१।ग
 प्राविदग्धाजहैताकुलटा।मुदितामानु।रहीजुअ
 नुसयानादिवसपरकीयाहों।जांनु।५२।अथग

पू॥ नयोहोतहेहोयगोसुरतिजुनानिप्रकार॥ जोदुखवै
गुप्तसैंसुरनगुप्तानारि॥ ५३॥ कविता॥ सातेस्वानिपटा
वनकैंसवकीमतिमाहकैंढेलिपटैये॥ पार्इसिगईयिं
जरातिकैंसुंदरकौतिगहोनसुकाहिदेयैये॥ भोरप्रना
रकेवीजनिक्केषरीमांगकेमोतिनकैंमुषनैये॥ तीछि
नचैतकीचांदनीसौतनुचोचहीलितजवैटिगजैये॥ ५४॥
विदग्धा॥ कहीविदग्धानायकानाकेदुविरदिवेक
वागविदग्धाएकहैक्रियाविदग्धाएक॥ ५५॥ ताजकी
दुग्धा॥ ५६॥ सुंदरजांनिकैंसुंदरकेपिछवारैहैंसुंदरहोटे

हाई॥चाहकछुकह्योपेसकुचेतवकीनीहैवातहंमेच
राई॥पूछेपरोसनिकोंमिसकेंउतवाहीमेंपीकोंसहेर
वताई॥साथचलेंगीहैंकालिहीजागुगीदेवीकेदेहे
पूजनिमाई॥प्रसाक्रियाविदग्धवर्णनं॥जातहीवाल
श्रीनिमेंलालकोपाछेतेंबोलसुयोंअनुरगी॥क्योंल
धियेजधिजेहैंसषालषपैहैंकेलालचकेरसपागी॥बो
फिदईतवसाथकीसुंदरयोंडगरीडगदेंकरप्रागी॥के
रकेंनारिकह्योचलनारिसोंटेरनकेमिसहेरनलागी॥
अचितावर्णनं॥जाहिषातसोंप्रीतिद्वैश्रुतिल

सै सखियों ताहि कवि सुंदर नारी निमें कहै लहि ता ताहि
५६॥ कविता ॥ प्राप्ति भई भला भई वा हो नित नित नई ह
मसौं दुराव दई कोहे कों करति है ॥ हि नून तो हो न सुष
हित की सुनें ते वा तति नई सौं सुंदर रुखाई क्यों धरति
हे ॥ एक मन एक मन एक जीव एक प्राण आपस में दु
हन कौ एक सी अराति है ॥ प्रछति हों कां नू जव कै सो
कां नू कौ न कव प्रजाने कै कै सैं तव ओदकि परति है
॥ अथ कुल टालहि नं ॥ ६० ॥ निस दिन जाके रतिक
था सदा कां मसौं कामा ॥ मात अने कनसौं रमें कुलटा

जाकोनाम॥१५॥कविता॥अं चरडारि रही अलवेली ह
गंचे बलचंचलहें चपलानें सुंदरनें न किसें नहीमें
अनेकप्रनागत आनतघातें॥वैठिकरोषनिमां ऊज
हां नु कुकेंदुरकें मुरिकें मुसकातें॥तौही लें जीकोंपरे
कलजौ लोचलें कछु काम कलोजकी वातें॥१२॥अ
द्यमुदिता लखनं॥दोहा॥ सुनत जामती वातके फू
ले जाकी गत॥तासों मुदिता कहतें हैं जे कौ विता स
रसाना॥३॥कविता॥लोगवरात गएषगरे तुमरा
तजगे कों चले सवकोऊ सुंदरमंदिर सुनाईहां

प्रवके रषवारे हैं नाहिन जोके । सासु कहैत वही लषिहैं
लहुरी दुलही घरही यह सोऊं । फूलि गई सुखि लिवात
योगात समात न कंचुकी में कुच दोऊं ॥ ६४ ॥ अथ अ
नुसया जेका ॥ कहें अनुसयाना निविद्यत हं एकप
हनेदं विन सत ठौर सहेट के पावे जिय में घेद ॥ ६५ ॥
कविता ॥ केसै है कुंज के सुंदर फूल विराजत पात जराव
जस्यौ सौ ॥ योसै तो आवत पावत ही पति रतिके लि
के रंग नस्यौ सौ ॥ शयो वसंत वयारी वहै प्रवतौ य
ह देखिये गौ न धस्यौ सौ ॥ सोचत यों पुनि पात फरौ मु

षट्क गयो प्यार को पात तो सो ॥ ६ ॥ दुनिया जे द ॥ दे
ह ॥ यों सो चत संकेत ठौर को आगें होय न होया ॥ ७ ॥
नेद प्रनु सयान को यह जानें सब कोया ॥ ८ ॥ कविला ॥
सासुरे कों चली वाहिर वाग विलोकत न ही अशियां
भरि आई जां न तहे जु सती जन कीति न जान न ही कां
न में समझाई देखे विना जु न जा है भली रतिके लिके
हर कों पछिताई जात जहां कों तहां पुनि सुंदर धरि
सने घने प्रवराई ॥ ९ ॥ पाय आवे संकेत ठौर तें लिय
अट कर ते जानें ॥ न गई हों पछिताइ जु लिय मन यों

नुसयानवषांनै॥ ६५॥ ककित्त॥ हरिः प्रा एजवैसिरफू
जधरैपकरेकरसुंदरगोपनईतवनागरजोकिवाम
मैहेमुरजावइरहीअनुरागभईपछितानसुसौमन
हीमनमोंककहेसुधिकाहनमोहिदई॥ जिहिठोरहं
बेलकोंलालगएहैंकहाकहीएआलीहोंनगई॥ ७०॥

अथ सामान्यवनितातुर्येनां॥ तासोंसामान्यवनि
ताकहेमहाकविराई॥ जोकेमिलेंसवनरनिकोंघन
लीजैनुपजाई॥ ७१॥ लटकमटकमुसकाइमुरकरे
कटाछुसिंगार॥ बहुदाभिनिकोदानिअवआयोदे

ये द्वारा २३ कहें अन्य संजोग दुष्पिता वक्रोक्ति गर्वि
ताहि मां नवती सा मा न्यत्रिय निमें एई ती न्यो आहि
॥७३॥ अन्य संजोग दुष्पिता ॥ पिय रति करि हे जा त्रि
यनि सुनत ही देषी अनघाई सो वह अन्य संजोग दुः
स्विता केहे महा कविराई ७४ ॥ विदूषिता दूती ॥ वि
कुरी अलक नैन रस भरे फल कत मप कत पल कवे जो
रे व विवाई हो प्रदल वदल कनि भूषन सकल कहि
सुंदर प्रघर में नघर नल जाई हो जगर नगर जेति भे
सी अंग अंग होति कंचन की चा दी जानों अंग मेव ता

इहै मैं तो ही पछाई सुधि लेन वाक साई की सुदती दुष
दाई देखा कैसी द्वै कै आई है ॥ १५ ॥ कृष्ण गवर्दिता
जैश ॥ कहों बक्रा कि गवर्दिता ता को द्विध विवेक प्रे
म गवर्दिता एक है रूप गवर्दिता ॥ जो कै प्रीय का प्राति को जि
य मै होय गुमान प्रेम गवर्दिता नारी को सुंदर ये हे वयां
न ॥ १७ ॥ कविना ॥ ति य ले रोई के न भ लो जु निरं त भूष
न ते रे ब ना व त है ॥ हम को तो हमारे ही प्रीत म को प्रन
प्रे सो ज हां टि ग आ व त है ॥ ज व सुं दर हों प ह रों ग ह वों
त व यों क हि कै उ त रा व त है ॥ तु व मूर ति सों मे रे नैन

जगदतनो हं न प्रेत रं भावं त हे ॥ ६ ॥ ह्यगार्धितं ॥
॥ ७ ॥ अपत्ते तन के रूप पर जो नारी गरं वा शं रूप
गार्धितं नायिका ताहिक हे कं विराई ॥ ८ ॥ कं वित्त
॥ ९ ॥ प्रान न ह मारे के त मा से सुभों सुंदर ए चुं व न कर त का
न क्यो हं न प्रघा त हे निरधि निरधि शं वि खल चो त
स घी स व चा ह न च को र निके लो च न यु भा त हे ॥ १० ॥ औ
र सु नों क म ल के भो रं भो रं दो र न हे वै ठि वे कों ॥ ११ ॥ स पा
सि शं नि म ड रा त हे ॥ १२ ॥ को टे म त प्र घ र ति या ड र ते मे री
शाला वि ड र त वि ड र त हा थ र हि जा त हे ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥

नवतंत्रपियप्रपराधीजानतियरुहेरुखाहोइतासौये
 करूपकोंमानकहेसबकोइ॥२॥ अथमध्यमगुरुक
 हतहैंतीनिभ्रान्तिकोमान॥ ज्यौउपजेजैसैंसिदे
 लोंसबकरैवधाना॥२॥ अथमध्यमनलधनी॥ और
 नारितिनदेखतपियकोंदेखिजुतियप्रनघाईयों
 उपजेअथमानककुष्यालनहामैमिदिजाई॥३॥
 अथन॥ पियदेखतदेखेजुओरतियादृगल्यौरपिय
 तवैहीवदलैहरिजानकैमानवनाहैभईइहभ्रान्ति
 मनावनकोंअवलेकरिसुंदरचानुरासौंकियोगा

नपे जानिकें तानमें चूक चले नर हो गयो वो लज्जित
 जीमान कहो हसि सीधे भले जू भले ॥ २४ ॥ मध्यम
 नलक्ष्मण ॥ देहा ॥ और नारिको नाम लेवान न कहै
 सुजांन ॥ यों सुनि त्रिय होइ मानिनी सो कहि मध्यम
 मान ॥ २५ ॥ दक्षिण ॥ पोटे हे पायु पिपा पलिका कछु
 कां मकथानिके भें दू उचा हो ॥ सुंदर मोहन जू मुख
 ते मुकनागर नारिको मान बिका हो ॥ प्यार दायो
 सतराइ करे टतरों ना कौ भावन हं यों निहा हो
 ॥ मोन के भार भस्यो लटको रथ मानों मन्मथ को

करिमास्यो ॥ २४ ॥ प्राणमुरारेजुठी कहि नारिख्यो मोसोभि
जावनहो मुखकी प्राव ॥ जानोहो जानतनाहिनवासो
हेवातनिकोनेमै जाइजुरेजवा प्यारीसो प्यारेकस्योक
रि जोरि कै तेरासो तेरायो प्रछति है सब ॥ मुनिकै त
वसुंदवो जत ॥ यो ननु कालही मानत ज्यो नरुनीत
वा ॥ १ ॥ गुरु सां न लखु न ॥ प्रतिश्रावे रति अनन
करितियत किचि हनरिसाइ ॥ उपजत है गुरुमान
तहं कूटै पकरै पाई ॥ २ ॥ कवित ॥ ला लके माल
नयो लखि जावक पावक सेनये नैन पिथाके ना

होनहारिनि होरन जागेन सहाने कत उनतियाके
 ॥ सुंदर पाइन प्यारै पत्तो पै गये वटि श्रेसे हुलास
 हियाके ॥ फूलि गयो मन भूलि गइरि सूरि के वंद
 गए प्रियाके ॥ ॥ अथ एतौ चिन्ता ने देवरा
 नंदो हा ॥ तत्र मम धर्म प्रथम अह दिव्य प्रदिव्य
 विवेक श्रेसे वरनत नायिका वाटे ग्रंथ अनेक ॥ ॥
 या होतें संक्षिप्त सुनि सुंदर कियो विचार वरनत
 प्राठो नायिका संगे रसको पार ॥ ॥ अथ ना
 यिका नाम ॥ प्रोषित पतिका घंडिता कलहंतरि

श्रीमद्भक्तिसुखाश्रयणम् ॥

तासां प्रविप्रलब्धनुतकंठितावासकसज्जाना
 मः ६२ स्वध्यानपत्रिका नायकाश्रमिसारिकाग
 नाई प्राठप्रकारजुभेदहैवरनें महाकविराई
 ६३ जाके कंथाविदेसकौंगवन कियोजवहोइ
 यिद्यविनव्याकुलतिथजुतिप्रोषितपत्रिका सो
 ई ६४ प्रोषतिपत्रिकानारिकी शतिकहीक
 विसाइ दसों प्रवस्था देहमें व्यापत जाके आई
 ६५ मुग्धा प्रोषितपत्रिक को विरहन परगटहो
 त ज्यो घटमध्यके दीपके भीतर हा उद्योत ६६

परदेसकों लाल चले यह हां लहेवालकों
 काल्हों के विकुरों॥ मन ही मन घेदन ही जा ए भेद स
 खा हसों सुंदर वात जुरें॥ प्रसुवा न रिश्रां वत हेव
 सनी लों संको चतें नीतर कों नु मुरें॥ कुल वंति के
 जैसे कटा छ चले चलि के हग प्रंचल ही में दु रें॥
 ४३॥ मध्या प्रोक्षित पतिका॥ सुंदर हों ग ई ह्य भां
 नु के विलोकि प्रा ई वै रि नि कों वा ठो विष्टा विरह
 वं ला इकी॥ अलि जात वान पां न रूप रंग आं न आं
 न मां न स कों चिंता आं न हो त चित चा इकी॥ का

लि हा चले हैं का नु म थुरा कों माई प्रा जु प्रै सी ग ति भई द
 ई रा धि का की का इ की वो ल नि हैं जी ली प्र व लो क नि
 ल जाली कै सी हो इ ग ई टाली प ग जे हरि ज रा इ की ॥
 ६८ ॥ प्रो टा प्रो धि त य नि क ॥ जान ति हा प्र व लौ न क
 धू वि छु रे नै वि धा यों व टै त न हा कों ॥ प्रा ली क हो पै क
 ही न परै प ल छो टि भ र ष जु भ ई म न ही कों ॥ सुं दर प
 नो को ली त न ज्यौं परि वा के ल में ल गै रा हु श शा कों
 ॥ ज्यौं त जि गे ह ग यो पिय पं थि ग ह्यौ त व नै प्र ति यों
 दु ष जी कों ॥ ६९ ॥ द्वि ता या प्रो टा प्रो धि त य नि क

पातमगोनकिधौंनियगोनकिभारकिभौंनभयानभा
रोपावसपावकफूलकिसूलपुरंदरचापकीसुंदर
श्रीरौंसाशिवधारिकिधौंतरवारिहैवारिदवारि
रूपानविसारोकोइलकुकपरीतनलककिचा
तकवोलचकोरकोचारो॥१००॥परकीयाप्रोधि
तपतिका॥मातचल्येपरदेशकूविरहकितापकि
वालदुरावैसोपरकीयाप्रोधितपतिकासुंदरनारि
कहोवै॥१०१॥कविज्ञानजतजोभरिऊचेनुसास
तोप्रावतहैउरतेनुरेप्रातरठोरकोभैननिके

प्रसुता पुनिनी चेही कों निचुरें सुंदर चाहत वातक
 ह्यो अथरा मुखते सुख ही कों मुरे दान दया लचले
 देइ तो दुष देखत जैसे दुरे हो दुरे ॥ सा म न्या वि
 नि त प्रो धित पति का ॥ विछुरे मात दाम ले वे कों
 गुन सौं विरह जनायो नगर नायिका प्रो धित प
 तिका सो वह नारिक वा हो अगन का विछुरे कं थ
 सौं मिस करि हग मरि लेइ प्रेम जना वै धालये जे
 प्रावे धन देई ॥ न नि प्रो धित पति का सा म न्या वि
 प्र य स दि ता क सु द ॥ प्र न त मा न र नि प ति क हं

शोवे जोके धामु दिषिचिहन अनधा त प्रतिमुवह
 धंडिता वाना शारीति धंडिता नारिकी करे महा कवि
 राईरूटिरहे चिंता करे चुपके रहे रिसाई ॥ १ ॥ सु
 धंडिता नाह कछानी में देखिन वचन नारिन तोट
 कही पुनिएसे सुंदर वागे की चोली में मैलिके ल्या
 प्रेहें चंदकला घरि कैसे ॥ बलिवे को ह म को य देहु
 ज्यों सुनि के हरि लो र हरे से ॥ जाय लई नुरसो ह सि
 यों कसि दो करे हे कसिरा धी ये जै सौ ॥ १ ॥ ध्या धंडि
 ली ॥ १ ॥ अ एक हरति मांनिके मोहन न वन प्रे वस

वेवदलेहें। घोंपियकौतकेरूपतियातऊवाले
 कछूनवुरेकिभलेहें। शायिनवाचतेआसूगिरे
 कहिसुंदरकाजरसोंजुमिलेहें। सौंनवियोंअ
 रविंदननेआलिकेमानोंचेंदुवाछुटेहैं।
 दाखिना। काननकानननुहैंहडोलतसुजान
 कांनूआननकीआनाआनभोतिपषीयतहै। वि
 नगुनमालनुघरीगुपाललाल। आंघेंलालला
 लकौनलेषेंलेषीयतहै। सुंदरअधरपरपीक
 कीलसतलीकवीचकारेकाजरकीरेषरेषीय

तहैं एतपर कहत हो देख्यो तव कद्यो मैं जु और आ
ग लाइ कै दायो लै देखिय नहैं ॥ जागे कहूं हग
लागे कहूं रस पांगे कहूं नुम ह्यां अज रहूं हौ ॥ घान
कहूं कही वात कहूं चल जात कहूं चित ए कित
हैं हौ ॥ काहे कौ सुंदर सौं हनिषा कहूं ठहरा न कहूं कव
हैं हौ ॥ सां न कहूं अघरात कहूं पिछं रात कहूं भए प्रा
त कहूं हौ ॥ परकी या सां डित ॥ प्राण कहूं रति मां
निविहारि कै मोहन मोहनी देखि भई मन हीनी
सुंदर दोस नु लैन कछु विधि मेरे ललाट में यौलि

विराडां॥५॥ कलहंत रितानारिकेरीनियेहेभ्रमता
पा॥ नुचेईनुसासभरिइंद्रीविकलप्रलाप॥५॥
मुग्धाकलहंत रिता॥ लखिलाललजाइरही
जलनाकहि सुंदरवैठी प्रलीगनमौ॥ हरिहरेवु
जायनवोली जवैतववैऊ गएनुठिकेवनमै॥ ए
तौसंतापकस्योपहिलें पुनिकेसेतचीतनहीत
नमौ॥ कहिकेनसकेसषीहंसोककूपकताइमह
मनहीमनमौ॥५॥ ॥५॥ कलहंत रिता॥
आएजादोंराइदेकलोचनरहैतजाईकह्यो

समुदायमें न मान्यो नुहि छिन हैं फिरि पति गए हैं
 ते पछिताति प्रति राति रति पति सुंदर त वायोत
 नुति न है कहा कहौं आली कछु कहि वे की नां
 ही जैसी लाज कां म दो नूह मिलि मोसों कराइ न है
 वा ल्यो ह न जान प्र न बो लें ह न र ह्यो जात बो ले
 प्र न बो ले दु ह नंति न कठिन है ॥ १॥ प्रौदा क ल
 ह न रिता ॥ सो है करी को रि को रि सुंदर कि नौ नि
 हो रि ठाटे प्र ये हा थ जो रि जै सें होत चरो है प्र
 सं ड न भांति न मु ना इ हारे मो ह न जू मां नें ना हि

नकोंवहकाइनवाईगईहैं। कुं नकीदेहरीठालीकरी
लेपकेलेकंभीतरठानिदईहैं। कुं नविहारीगिहा
रेउहांनवहीवहवैकिचकेचिनईहैं। सुंदरदेव्ये
सखावनभैसौनुआंघिनहीसरोसभईहैं। आ
मध्याविप्रलब्धा।। घटाघहरतिप्रतिवाजुरीन
ठहरतिनुठिआएहरिप्रातयेसंभेघरमें। कं
मकीचपेटलयेलाजकीलटल्योहंहरिसौंनच
ईनेटसहेटकेघरमें। भैचकसाएहीकहि सुंदर
प्रचंभौतहांहले। नचलेबूझिगईसोचरस।

मैं प्राची प्राची प्रांघिनसों अवलोकहत प्राणी
तनि प्रांघीवात प्रांघनमें प्राघीक प्रघरमें
ध॥ श्री दामि प्रज व्या॥ उठि आई हों देवनि को वि
यका सिवना उवम्यो सुनिकें घरकों॥ कहि सुंद
रभीतर जायजो देखों तौ खोजन ही कहूं का नूर
को॥ इहवी चित्तौ वानक मां नगहा कर तां निज
दो परि संवरकों॥ जव जा म्यो वचा जत क्यो
हंसषी लवघां नघ सौ हियमें हरिको॥ २५॥
रकी प्रा वि प्रज व्या॥ प्रति प्रांघन दसों उठि आई

पियापीयदेव्योनभीतरिकुंजनहैं। तियलेतउरा
हविराहचलीअलिसोंकहि कैंइनवाततहैं। कहि
सुंदरनेसोंकहाकहियैजिनअेसीकरासधीनूधनिहैं
।।मिसकैंसुनिमोसीकेन्यौतेभईफिरिअेसोवनानु
कहवनिहो।।३५।।सामान्यवनिताविप्रलब्धा।।
करिसिंगारवनिवनिवहुलगईमेंनेटिकेगेहाप्रि
ल्योनपिययायोन-धनयातेंआकुलदेहा।।३६।।
विप्रलब्धासमाप्ता।।अथउल्का।।कहेतेअायेन
हीपिसहेटकेषान।।घोंचिंताजौकरतिथ

उत्का जानो हजं म॥ २८ ॥ कां पेशे वेतन तव पेशे
ति प्रेडा इजभा इरी ति इहे उत्कानि की सखी
सों कहै सुभा शं ॥ २९ ॥ कविता ॥ काहे ते न प्रायो
का नूहा काहु का पिनी घों कहूं कां सके कले
लनि में राख्यो जानों चोरि है ॥ सो चत यों म
न ही मैं सुंदर नवल नारिके सी है घों विध आ
जुकल कौ न भरि है ॥ ऊचे ननु सा सले सके
न ऊंचे देखि सके पछे न सखा सों प्रेसा इहां
लौ ल जो रि है ॥ सब की वचा ईडी ठि चानुरी

सौं मोरित न नैनं निकी कोरिन सौं चित यों मरोरि
 हैं ॥३०॥ मध्यानुक्ता ॥ वात न धीत नि सौं अट को
 कि मिली तिय को ऊर ह्योर मितां ही ॥ प्रो ए तो चू
 कन सुंदर वादि नुं क ह्यो ऊठ नि लागी हे स्या ही
 ॥ शायो न ही सघा प्रु छिये के सैं क हा म नु दे त हे
 ते रो नु गा ही ॥ चों प घटी कि मिये चित चा नु कि
 अरिल सनी द कि वे पर वा ही ॥ ३१ ॥ प्रोटा नुक्ता ॥
 घेलत सघा नि सा थ ग ए र हि व्र ज नां थ के यों नु
 र ना रि हा थ को ऊ क हं क हा परी है ॥ हां तो कि

चोहिनु किधौं चलायो हेचूकचित सुंदर कविकहिक
हृजियमाहि धरी है ॥ प्रसकु ननयो किधौं क
बूँ और ठाठठयो किधौं काहूमतौ नयो दैकें म
तिहरी है ॥ और वार आवत प्रवासमे रेखास
नही आजुधौं प्रवारकां नु उमार कौं करी है ॥
३२ ॥ परकीया जका ॥ सुकचैनसघासौं नसौ
तनिसपनेहंनकां निकरेकवहं ॥ करिमानिकें
निनि सौं यौं हाकहै किडहँ एतैं हौं नडहं कवहं
कहि सुंदर नंदकुमार लएति नकौं ननकौं न

हिचैनकहंहरिकेहितमेंउकरीइतनीहरिकी
नीनुप्राएनहोप्रजहं॥३३॥सामान्यवनिताउ
का॥काहूकौघनदेवहनवसिहोइवस्योवि
चित्रा॥जाननहैंआयेनहीयातेंप्रजहंपित्र
॥३४॥प्रथवासकसज्जा॥निश्चयमेरीसेज
परिपियप्रवेगोप्राजु॥वासकसज्जाजानि
सोसजेसुरतिकोसाजु॥३५॥पियपुखसखि
सोंहसेपूछेसजेसिंगारा॥वासकसज्जाजानि
सो कहिसुंदरयोहारा॥३६॥पुग्धावासकस

ॐ न के कौं न के ना तर जाय के वैठी सिंगार
 कौ सा जव नाथो देखते हैं दुरि द्वार की प्रेरनिका
 हसखी सौं न मे दन नाथो ॥ चाहि चरित्र विनोद
 के में न हं प्राधनयो प्रतिघन्यग नाथो ॥ ३७ ॥ ॥ ॥
 वास कथ ॐ ॥ प्रावहिते जवटि प्रन्हाइ वैठी पा
 टी धारि आंखें प्राजिएडी सांजिक कहकहा लगी है
 ॥ नगर नगर होत प्राधन सवतन सुंदर ज्यो
 पूजत वसंत वी चवा गहै ॥ देखत है कहा मुसका
 त जात जात नहौं प्रातम सौं सुरत सौं प्रति प्रनु

रागहौ॥ प्रथमो नस्तरमां ऊवरे न उच्चारै द्योतेरै नो
 रीमाई इहां फूसहीते फागहै॥ ३६॥ छोटा वासक
 सज्जा॥ वेठीसिंगारकें देहमें यों अनुरागदिपै दु
 तिज्योगनमें॥ प्रतिजेवलगे सिरफूलनेलेकें ज
 राइकजे हरि लोंपगमें॥ जागिरहेदगद्वारकी ओ
 रलखें कि विसुंदर यों रगमें॥ आव-आवहिगेपि
 यजा निपियायों विछाएहैं कंजमनों मगमें॥ ३७
 ॥ परदया वासक सज्जा॥ छोरा ना जिठोनी सा
 सुनेदसवगळी सवाई सुंदर कहानी कहिवरनव

रनि सों ॥ सारि का सुवा निहं के पिं जरा उतारि धरे
मि सु कें न का सी वा हर घ रनि सों ॥ दि या प्र च रा
इ ग यो प्रे धि यारै दूर पु नि वों ट र हि प्रा ई चु प चा इ
कें ड रनि सों ॥ प्रा यो पि य इ ह प्रा स प लि का के
प्रा स पा स हो वें नि ज सा स ट क टो र न कर नि सों
॥ ४ ॥ सा सा न्य ता वा स क स ज्जा ॥ वा य पै कं क न
ले जु गी मा ला मु द री श रा य ह म नो र थ रा धि म न
सा जै स क ल सिं गार ॥ ४ ॥ इ ति वा स क स ज्जा ॥
प्र थ स्वा र्थे न प नि का फ र ता ॥ प्र ति व स भ यो

रहेपियजाकेसदाजुपियकप्यारी॥ ताहिकहत
स्वादीनभर्तृकासुंदररूपनुजारी॥ ४२॥ शरितियहेस्वा
धीनभर्तृकासदा रहेजुरसीली॥ प्रेमवाकसवरा
गसुनतहोभावेजुरुगर्वीली॥ ४३॥ मुग्धास्वाधी
नपतिक॥ सोवतलेतकरोटविनोदकेनीचल
देंपलकोसंपरीहैं॥ दिषतहाहरिसुंदरदौरिजाय
नागिनिसालपटीहैंगलेदुपटाअपनोंअपनेक
रपोछिकेसेजहामांफिधराहै॥ प्यारेकोप्यारनि
हारियोरीफिनईचकचूरसखासगरीहैं॥ ४४

मया साचीनपतिका ॥ सखियनमेंवैहोंजहं
 वादेहोंहिहठिनहंलाजनहोंगरीजांउंनैकन
 जुलेटरेषेनपरिपोहेंवैनदेहिकरवटिफेरि
 सखनलगगडुगहिमुंदरगरोगहें ॥ यांतोहि
 सखतिहोंऔरतेनूजांनतिहेकहिघोंसुभाव
 हाहाहारिकेहरेहरे ॥ मोहनकेमंदिरमेंकैसी
 कैसीसुंदरहैहेंघोंकहामोहनजूमोहीसुम
 धाकरै ॥ ४५ ॥ प्रोटा साचीनपतिका ॥ चाहेचित
 त्रोंपचाइलोचनरहे ॥ प्रथाहसुंदरछुडाइंग

गुंजपुंजकोलयोः रहीनवच्छविछाईमांनिको
सरसाइजेहरजराइकीअनूपरूपकन
योः॥चोकीपरवेदीश्राइसहेलीसोंफरमाई
एइडीउजराइवेकोंठाठजवहाठयोः॥देधियों
सुभाबंशरह्यौपछिताइपछिताइहाइहाइ
पाइनकोंमांवांकोनहोंनयोः॥ध॥परकी
यास्वाधानपतिका॥असोभयोरेहेलानजैसैं
जलमांऊंअनसुंदरअधीनअतिकांमकेरस
निसोंप्रातिनिमेंमिलीप्रातीगलीमेंहोंच

नाई सो का भिनि प्रसि सारिका कहै महा कवि राइ
धरारा नियो है प्रसि सारिका नि की समें समां न सिंगा
रासा हस संका कपट चानुरी ली एकर प्रसि सासा
५०॥ मृग्या प्रसि सारिका ॥ प्रो देहुने पलिक पौर पा
उ प्रसव परि श्रो ट दिवें दु पटा की ॥ ल्पा डै न बाइ प्र
ली न वला क हं वतें वनाइ सटा कें न टां का जे हरि
को पट को जवहा नयो सुंदर देहरी आनि प्र टा का
॥ प्रंग प्र नंग न रंग उठे मानों मो र गई सु नि घो र प
टा की ॥ मध्या प्रसि सारिका ॥ जो लो हों न चली तो

लौकैसा करी हलवली हाहा चली चली प्रलीलेतू
मोहि जाइकै ॥ प्राई उठि मंदिर ते कौनचौं पचाइ
नसौं इहां देखौ ॥ प्राइ दुगिर ही चुपचाइकै ॥ वेठि
रही कहा प्रवगों नाइत सा छंघटकै सुंदर सकुच
के सीरही नुपजायकै ॥ लेही नही ही एकेहुलास
सब परे करि पीतम कौं ॥ अघर पायुषरस प्याइकै
॥ ५२ ॥ धौंदां ॥ अचि शरि वला ॥ पहिले नु मयो पहकौ
सो उदौ कहि सुंदर मंदिर में चहुं आरनि ॥ पुनि प्रा
गै ही ॥ प्राइ उठी वसुवा सुरक्षौ ॥ नरिगेहु सुगंघम

कोरनि। विच्छिया पुत्रु वस्तु घुघुहल हक्योलहगा सु-
 नियों मनमें मधुरी घनघोरनि। मुसकात सी श्राप
 ही प्राइगई है जायाइल एतिरछी हग मोरनि।।
 ५३।। परकीया श्रमिसारिका।। स्यांमको ल्पार्सं दे
 सोसया मुनिकें सब सुदर साहस वाटे। चोंघिकें
 न्यनवोरि घरे विच्छियानिके वेगदेकां करका
 टे। घुघरी का घरि मोरकसा श्रगिया हंके वंधक
 सेगहि गाटे। जायव पहचीतहां बहप्यारी जहां
 हरि हे रत हे मगुठाटे। ५४।। द्विजिह्वं श्रमिसारिका
 परकीया

असै चलापियये विछियानि उतारि कै चोंधिक
अन छोरे ॥ कोसि घटेइ जुकाहू कों पछौ सघी
तेमिली जिनके मन मोरे ॥ जात कहं हो जुका
एकहं सुधि है कछु नैन तौ मोति न मोरे ॥ सुंद
असायरो सनिसौं कहि देहि गी दोरि सुगंधकी
दोरे ॥ ५५ ॥ दिवा भिसरिका ॥ अहर पाइ गुपाल
को म्वाल गली महि जाइ कै धाइ लीयौ है ॥ वातने
असा गई जुरि कै नग न्यों को कृमास आनि दायो
है ॥ सुंदर हौं उर ही चकिसात किटं पतिकों प्रति

गाढो ही यो हो ॥ चाही एरा तिका यो दुहि कें सुदुहं मि
॥ लि कें दिन हो में का यो हो ॥ १५ ॥ कृष्णा ज्ञि सारिका
॥ सो घिस हे टर ही रस के सब वा सुर का सुधि वास वि
सारी ॥ हिनु कें तुम सों त म ही चित ई श्रव घो स च
दो सु चढो कुल गारी ॥ को लनितें छुटि भोर च लें
ति न की श्रि सारिका छां हनि हा रा ॥ दो रि च ली दु
रि वे क हं यों ज्ञि य ज्ञान ति हे व ह जा त अध्या री ॥ १६ ॥
द्वि ती या कृष्णा ज्ञि सारिका ॥ करे घ न घ टा भा री
प हि री ले का री सारी श्रां घिन में दे यो ते रौ कारी

कजरुईहै॥ कारौ ईकुरंगसारघसिकैलगायौअं
गकारेचोवाकंनुकालेनलेहीनिगाईहै॥ कारेपा
रसुंदरप्रहाएसवअनकाशवैनीपाठि
परिहो॥ रिशुहाईहै॥ ऐसेसमेंऐसाहैकैज
इमिलीकानूरसौआजुहीतौसगरीकराइकां
मयाईहै॥ १२॥ अंकिहैनिपाठिका॥ फूलनि सौं
प्रहासांगचंदनचढायेअगनुमगीहैगंगसांनौंस
रदकेनीरकी॥ सोहतेहैसवतनमनमोतिनकेआ
अधनमोतिनकीजोतिसौंमिलीहैजोतिदीरकी

प्रसक्तं शिखरे प्रतिदंतनिकीर्तयेदुन्नितेसीए
गुरार्कहिसुंदरसरीरका॥चांदनीसीवालमिलि
चांदनीमैत्रेसीचलाजैसैछारसिंधुमेंचलीतरंग
छीरकी॥५॥सामान्यावनिताप्रतिषारिका॥
सुंदरसवलसिंगारसजिचलावालइहशसचाइ
अनुमनमानतौघतलेहोंपियपासा॥६॥अथ
नायकानिरूपण॥देहा॥सुंदरमुग्धानारिके
वजाकेअधिकारानाजकांसुएदेइहैमथा

कैविस्वार ॥ ६४ ॥ ओदासुधा नारिकेरसकौवदुतप्र
कासजोनियधीरजधरिरहेकहिघनहैधीरास
॥ ६२ ॥ जोनाशविनुधारजहिकहिअप्रधीतना
माधारजधरैप्रधारजहिधीराधीरातांम ॥ ६३ ॥
नियाजसरीअधिकहितकहतकनिष्ठनिका
सपरकीयासकेसरसतेंहैंहिकहंपरगास ॥ ६४ ॥
सामान्यातियकेयहैकेवलधनसोंकाज ॥ इहवि
धिभेदवियातिकेकहैमहाकविराज ॥ ६५ ॥ प्रा

दनायकाओं कहां लौं नव मावों होया जाको पि
य परदे सकों चलन कहति य सोइ ॥ ६६ ॥ चो है चले
विदे सकों छिन में जाको ईसा ॥ होइ प्रवत्स्य त भर्तृ
का कहि सुंदर नारासा ॥ ६७ ॥ राति प्रवत्स्य त तीय क
शासन रै उसास ॥ प्रसगुन होइ चले न पाय य
जाय में आसा ॥ ६८ ॥ पुधा प्रवत्स्य त्यका ॥ सुंदर
वाल मवात कहें परदे सानि कों चलिवे का चला
ईवां नहूतें ॥ प्रतियै न अचानक सो धुनि वाल
मान में आई ॥ इच्छि सकें न सघानि संको चनि ॥

वृद्धि गयो जिय राई नाचे रहा कर ज्यों वह लौं कि
रि कचे कों नारि नि नारि नु हाई ॥ ६ ॥ मध्या प्रद
त्यति का ॥ मोर नये मधुरा कों चलें गयो वा
त च ली हरे नंद लला की ॥ बोल सकी न संकोच
नि तें सुनिषा श भई मुख जोति तिया की हाथ
रि काइ लला हसों वै दाय हे नुप सां कवि सुंदर
ला की ॥ देखि मनो कर प्रायु कें आषरु प्रौर क
वर ही विचवा की ॥ ७ ॥ प्रौ हा मव ल्यति का ॥ ५
यो मु र ऊं नी सु वे हरि गों ननु वा रहनी मनो कं

जकलाहै केगईपाहनकीपुनआसुहःआएकहं
पलनौनहलीहै चाइनचाहेनचितकहंनवभ
चलताचलिवकीचलाहै ११

हरिभ्रमपुराकोवलेंगेछगीकरहेगा
जहांविछलारनियां वृषभानुसुतावनितानिमें
वैठेअचानकयोंहीसुनीवतियां तिहिवाहजुवा
जमेंवातीकछूकविषुंदजानैकोंःआननिया
ननवाहीकोजानतकेमनुजाननकेअहजान
तहैवनियां १२

का॥ पीतमचलेदिसकौं यौवोलेवरनारि॥ तौ
हिजयोंतेरेविरहमालादेहिउतारि॥ ७३॥ अथ
इत्तमालाचरणं॥ पियनकरैतियसोंहिहिहिति
यनतजेपियप्राति॥ यहसोउत्तमनायिका
उत्तमजाकीरति॥ ७४॥ इत्तमालाचरणं॥ कि॥ ७५॥
पकरैकरसोंकरप्रौरतियाकौलियेंफिरैज्यौं
धनदामिनिकों॥ इहनांतिनसुंदरकान्हलखै
फुनिकोपनकहका
लोचनलालहैंलालनकैवहजामिनीजागहैं

माननिकों॥ प्रपराद्यन होइत आवतयागतिभा
वेतकप्रतिभामिनिकों॥ १५॥ प्रथमध्यमलं
नं॥ पियकेहितसोंहो नहित प्रनहि प्रनहित
प्रनहित होय॥ ज्यों देखें त्यों प्रनुसरे सारिमध्य
मा सोइ॥ १६॥ कविता॥ प्रंगलागि जगे निसिजागे
जहां लियें प्राणसुगंधकी वासवही॥ जलनाल
खिलालकपिनकटा छनि॥ हूठिके पाठि देवे
ठिरहा॥ कवि सुंदर सों हैं करी कर सब्य सों हसि

5

कैंकहि नूकवही जोरि किता विनती जव कानूक
 हा ॥ कवि सुंदर लौ हैं कशी तव राधा क ह्यो सषी
 लों हसि कैंकहि नूकवही प्रवसांची सही ॥ १७ ॥
 प्रथम भाव लोना ॥ १८ ॥ लिय सों पात महित क
 रै निया रिसाय विनुका जा सोय ह प्रघमाना
 धिका वर नत है क विश ज ॥ १९ ॥ कवि न ॥ प्र
 वत ज्यौं देखे पिय आगे प्राय लये निया वैठा
 रि कैं नै चै कह्यो प्रा दर भ ग ति हे सु मन सुगं

प्रथम

नहों विस्तार ॥ २५ ॥ ॥ श्री नरै देव कवि ॥ कम
लके फूल की सुवास प्रंग सुकुमार प्रमल सीयो
नि जहां जल न लहीये ॥ चंद्र सौ चंद्र न तन चंपक
सों कुंदन सीवनी वसव ठौर जैसे जहां चहीये
॥ भावै देन प्रजासेत वसन सों रुविहाए लीए
लाजमान गति हस हकी सीस हीए ॥ थोरिया
ई धिक वैनी विच छन प्रयने नीजा में गुन सुंद
र पदमिनी संकहाए ॥ २५ ॥ ॥ श्री नरै देव कवि ॥
॥ २५ ॥ ॥ छन कटिपी न कुचमी न सेच पलने

नगजगौंनकारेवारमोरकीसावानीहैंअधुको
सुगंधजाकेसुरकेजलकोहैंलांवीहैनठैगना
नपातरानन्याशहै।सुंदरसजोमसुकुमारवों
निजिहंवाचिसेतफूलवदुरारौतहंनस्योपानी
हैंरतिसेंनरतिउपभोगहासौरतिचित्रसंग
तिसोभावरवोंचित्रिनावषांनहैं॥३॥संखि
नीवर्णनं।।मोटीलांवीनसदेहर्जचीमोटीकटि
वीनदेहीचितवनिकुचछोटैषोटेमनहै।योनि
मैसुगंधकामजलघनेघनेवारउताइ।।

लंबी लै गत ज्यों घन है ॥ रातो पट भावें न घसुरत
मैं न लावें वार बर तातो गत दया हानों रोस
सों पन है ॥ हीर घ है दंत पाई चोरो न बहु न या
इ प्रेसे जाके चिन्ह सों ॥ इ संधिनी कौत न है ॥ ४
॥ हरे लक्ष्मी वरुणें ॥ जंघा देह प्रोठ मोटे भूरे वारण
री प्राप्रपथो हीला जपेट भरघात है अथा हि कें
देहे पाइ पाइ की प्रागुरी हैं देहा सब ठंगनी सी
कोर पुनि बोले घहराई कें ॥ कांम जल की है गं
ध मद की गयंद के सी सुरत न कस्यो जाइ जा

सौमुषपाइकें चलेमंदगनिगहंकांधजांकनगरहं
हस्तिनीकनछनेहंगदगदियाइकें ८५

जासावातकंदमंनजांका ४३३

मरांम पासहेपरतातहैकहामघासांसांम

एहेकामसठिनंकन्रमनदहएदनेरे

दैनुराहनोसांखदेजांनैकरिपरिहाहहसांले

८७ नैखनैकेजा

वनसिंगारकोसिंगारकिघोंरूपहीकेरूपजे

सेअंगदेषियतहै तेरेअधरनकीनलाइल

निय
के

बं लालनके लोचनतौ सुंदर सुधासौं सीचियत
 हे॥ चारय हिरेनं को धरगौ चारमेश वारमांग
 हके चारयत हियों चारियत हे॥ ज्यों ज्यों कर
 कांग हलै वारन सवारत हो सोतिनके आंधि
 नकरोत दी जायत हे॥ ८५॥ उवाहनों॥ ॥ संज
 नकवलमगमा ननिके जेतवार सुंदर भएतौ
 को कुर्यों विदारियत हे॥ चानुरहैं चला कहैं
 नागरहैं नायकहैं जायकहैं मानसविनामा
 रियत हे॥ वां कहैं विसालहैं वडाईके बहैं तो वि

लोकेते प्रागलेकों वेष्टा गीयतेह कां ग १५
 रही मौनरेव यद्गद्गो कानने न न सांरु देी कां
 नयौ निहारियतेहे २०
 जनकों लखिलागत लोचन नानक ह जे मो लो
 मलषाए जीहं करवात दुरेन जहा हवत्तुं न
 रहेगी नहं सां सुखे सुंदर जो वनरूप लोषण
 सी कौ न न ईव लिवे सकशाए ह ह व लो वि
 नवो तो न लें चितवौ नें कुशोर की डाटि व ला
 यें २०
 सायके जे जल व लपे न तेव

लायल्यों सा सुरै कैसे लहेगा ॥ कजे कहा अपनों व
 सुहे ककु सा सुजु चाहे कद्यो सुकहेगी ॥ सुंदर जो
 लव ही नवयों प्रथियां नरि ल्यो तो न भानि र
 हेगी ॥ आई कहं हौ विचारि न देखौ इहं बहरी
 तिकहं निवेहेगी ॥ १॥ ^{विष्णु} ॥ कोने हों स
 वारं जाहु भीतरि हे प्यारि शिवह को हेव जमारी
 जिनवाहर पठाई हौ ॥ जादि न लगी हे डीठिता
 दि न तो नीदि नादि सुंदर में विनती कै विधि
 पेव चाई हौ ॥ मंत्रनिपटा इकरि जंत्रनिमटा

इतंत्रनिगडाइकाल्हिकोंद्रकेंजिवाइहोःकियोक
हाचाहतहोसोईकेंनकहोःआजुकाकिपाटपा
रिवेकेंपाटीपारिआइहोः॥२॥सखापरिहासा
विथुरीअलकनेंनरसभरेऊलकतनुठिःआइर
तिमानिरसिकरसालसें॥पियकेदसनलागे
तियकेकपोलनिमेंचौकापारेतियलधिवो
लीअलीवालसें॥छापसीकहोहेरहीसुंदरज
घरियहअसैंकहिएछिवेकेंनईकछूव्याल
सें॥ज्योहीकहोकाहांआएल्योहीपारीतिब

रच्छा इदेषो मुसका इमुह मासौ फूलमालसौ ॥६३

नायकाको परिहास ॥ देहों कहा दिवपानी की
वूडक मूंडतौ भागारथी सों भस्यो है ॥ जो कहों सुंद
र पावक सों हसु पावक तौ निज नैन कस्यो है ॥ गो
री कस्यो मुसुस्यो हसियो विधिनां हरना मन फू
हो घस्यो है ॥ खेलन श्राप जुवां मैं प्रवेनु मदी जि
ये मेरो जुहार हस्यो है ॥ ६४ ॥ नायका परिहास
नायका प्रति ॥ गुलाबके फूल काले पांशु रील
गाइनाल मृग मट् लायौ श्रोठ भंजन सों स्यो

कवे। प्रेसो रूप का ये प्यारी-प्रायो तो है प्यारी पास प्या
रापे छि-प्रोठे वैठी पाठि देत हांत वों का जर अधर में
न जाव कल लट में न सो है वैठो छि जो मत यों क
द्यो प्रली जे वैरा घा तो र ही लजा इह से हरि ह ह स
इहां सिंह सघे रो क ह्यो सुंदर सधी से वै ल प्रो दो हा
॥ दूती जावा ॥ दूत पने में प्र-प्रति निपुन सो कहि दू
ती वां मा ॥ जो रि दे इ व र नै विर ह ए दूति न के कां
मा ॥ धा ॥ जो रि दे इ दूती कर्म स् ॥ कविता ॥ सो
तो हे न नौ दा सधी अंचर दे जानत न पिप पास

पृ
५५

कोरिबेकी घात कहा जाना है ॥ मेरे लाइबेकी लाज
 की जो जालवलि जानु आबुरनह जो वह अव
 ही प्रयांनी है ॥ यह रसरीति कही सुंदर रसिक
 की जो रसही सौ मिलिले दुःख जौं वरवानी है ॥ में
 नासी पहाई जब पहर अट्टाई परतीति में वटाई
 तव कौं हे कौं हू प्रांनी है ॥ १७ ॥ नाथका की पद
 की दूनी ॥ डीठि सौं न जो रे डीठि दे दे वैठे करि पाठि
 सुंदर वसीठ कहे कहा करेताता सौं ॥ तिहारें तो
 जागी जक ल्याहु ल्याहु जाहि जाहि हों तो जाती

बहुतों जिहारा जो नया सीसों ॥ न के व ओ रा ति
दिन यह है न एक छिनने हविनु के संके उजारे
होत वाती सों ॥ हों तो थका जाई जाई हा हा धा ड
गबहे पाइ ॥ प्रपही मनाई जाइ जाइ लै दु छाती
सों ॥ ॥ ॥ नाथ का के पछ की दूता ॥ कवित्त ॥
तनकत नैती करसों हुन कों तां न त हों जे तो धी
रा हे मन ते ता तव कहें गौ ॥ जा ही मुख में सों स
तरां नी सु नों मे रां नी यहै मुख में नुका कहं
नाहसिक कहें गौ ॥ सुंदर कुमर घन स्यां म ज्ज

के देखे प्रेसैं कामिनि कौ जौ नकार देहे प्रह देहे
गोपमे रतो मनायेत न मानत हौं लखालाल तो
वदौंगामानिनी जौ मानत वरहेगो ॥६६॥ ना
थकके पछि की दूती ॥ लाल प्रयनै हैं प्राली एतौ
नरिसे येवलिकहा भयो चलिहसिनै कुनंदन
देहे वैही यत बोली थयत हिलिमिलिषली य
तकेधौं काजियत कहिसुंदर यों दंदहें ॥ हा
हा देषिसौं हैं तोहि कौटिको टिसौं हैं केसौ
प्रेसेसमें मानतये प्रेसो मनमंदहे केसौनी

कौनायक सकल सुखदायक है केसानी की चां
दनी है केसौ नीको चंद है ॥२००॥ विरहनिदंता ॥
मेरी आलीशानों का ल्हूटे ही चाल चलि आई ना घरीनें
खेलत न बोलत हसत है ॥ जैसे मीन विनु जल कौं हं
न परत न कलवे सुधि विकल नई असी ससकत
है ॥ सुंदरतपै है तन कहं डारि रही मननें कुनस
भारे हरि भाय तरसत है ॥ प्रायिन मैं भौं ह न मैं मु
ष मुसकातनि मैं ठोर ठोर नेरे टग ठगोरी वसा
त है ॥२०१॥ अथ नायक विरह वेदना ॥ कहं व

नमाल कहं कंचन कीमाल कहं संग सधा गवाल
 ऐसी चाल भुलि गई है ॥ कहं मोर चंद्रिका लकुट
 पोत पट मुरली सुकट कहं न्यासी डारि दर्ई है ॥ कुं
 डल प्रडोल कहि सुंदर नवो लैवोल लोचन ही
 लाल मांनों का ह हरि लई है ॥ घूंघट का ओट
 हैं कंचित यौ कि चोरि करी लाल नितो तव ही तै लो
 ट पोट भई है ॥ २ ॥ प्रथमाय क वर्ण न हो हा ॥ दु
 हवन कौ सिंगार रस सरस होत है ॥ प्रान ॥ जै सें व
 र नी नायक लौ नायक निवधानि ॥ ३ ॥ परह

हा॥ सोनायपति उपपति वैसिक विविध भेद है
 यहता कौ॥ व्याहोपति अनव्याहो उपपति वै
 सिक पति गनिका कौ॥ ५॥ अथ पतिव्रता चेष्य
 क विज्ञा॥ हम सब आजासि जीवे ठीरंग रलिनि
 में दुलही यों सहे जी सों खेल सा करत है इहवी
 चिकाहू बाल चालनि में कह्यो को नृप्रेसी ड
 री सुंदरी ज्यों को न डरत है॥ छोडि कै विछोनां
 मृगछोना ज्यों उछरि परी छाती छोह मरी हि
 यें चार नुघरत हैं॥ हों तो रह देयें जेयें अनसु

ब्रह्मो देव जिहानी प्राणि परै गा ॥ १ ॥ मरु सुप्र
जह्नु नं ॥ जोवन के मरु सों मती चित वे चलै जु
नारि ताहि सों मरु कहत हैं पंडित लोग विवा
हि ॥ १० ॥ कथि ॥ जोवन के मरु मांती है सुंदर
नैन निका नर शकौ बनाये चूनरिया चट
की ली लुवी ली कवे सरिया चित लेत चु रा
ए ॥ बाहे पयो घट जे हरि गाठी हे से हरि रा कि
य है लु वि पाये ॥ न चावत नैन चलै नटु वा
सा ॥ शु गूढ नि जे टि प्र नो टु उ ट ये ॥ १० ॥ ॥

लषनहृदललुलं॥घरिचारिप्रोवेनपिषतधि
कैयों॥प्रकुलाई॥निदेनिजभागनिमुयोंनपनक
हेकविराई॥२॥धनंजयदहतहियदेहकेदु
कूलदेविसूलसौस्तगनजाग्योफूलनिकै
गहनै॥सौधौसेजसरसकुरंपसारघरनसारसा
रहतेसरसानें॥अवकहाकहनै॥धकेसमान्य
एसुंदरसव।तरिषिलटकैहेहरतीक्यैहोइगो॥
निवह्नै॥२॥सधैंअलोकनि॥प्राचीरातिह
हईपिय॥अजहन॥प्राण॥पाली॥अपनौ॥अल

हनों ॥ ४ ॥ मरघताकीवातकोंकहेकछूजौना
रि ॥ मुग्धहावतासोंकहेंपंडितलोकविचार
॥ ५ ॥ तिलुताकेसीहैकैसेहैरूपवेहोइगेकोंन
ससूपधरै ॥ जिनकीजुनिडाएनसोंकहिमुं
दाएमनिमानिकमोतीफरे ॥ यिययेसौजु
पायकछूहैकहेंअपुनीअधियांसिसोंदेव्यो
परै ॥ मनमोहनसोसौनबोलतिहैमुसका
यकहामुयमौनकरै ॥ ६ ॥ सुसुयितहाव
यियकीवातनिकेचलैतियअंगरायजं

इहावमोहातियतकहतहेताहिमहाक
इहावतिहेमपकीपलकेमलकेह
गवोलतिहेप्रसोते॥अंडिजभाइउठेअंगरा
इअमेठतिहेतनकौकरिहोते॥अंगअनेग
नरंगमकोरतिमुंदरप्रोहसुभावनयोतेहो
तेहेप्यारापियातवशयोचलेजवहीकछ
कांनकावाते॥एवतिछिनिहकापियसौ
रिसियातेनियाकरेनकछसिंगारासधीम
नाइसवारहीएविछिनिप्रकारा॥एवकाज

रकांगहीतेलसुगंधसिंगारकसौंजसखीसव
 ल्याईपीतमकौंजियमेरिसियातैनिशदर
 केदृगत्रौंहचटाईकोऊनबोलिसकेअलि
 ओरतहांकविसुंदरमेंसमुझाईआजुमना
 ईमनाईनिहोरिसखीकरिकेसैंहीकेसैंव
 नाई॥२०॥*चिह्नो कहुना*॥ लालमनावैवा
 लकौंटेभूनपागघोकवाजबोधिगलमा
 लसौंमारैयहविघोक॥२१॥ आइधरेघर
 भयनसूधेनियाचिनवैनजुतैहठनाचे

जागे मनावनसौहैं हहा करि ॥ जो रत हाथ निवस्व
नकांधें ॥ लै हे यहै जव सुंदर पापु हकेरि कटा
वति या सरसांधें ॥ कपोल नि कंज कला कहरि क
रदे कुले फूल का माल सों बांधे ॥ २॥ विलस
दादा ॥ चित्त कहं चित वत कहं ॥ श्री वैशि
यपा सदे वैपनि की सौं जस वसौंधें से ज प्रवप
॥ ३ ॥ मोरं मुख सोहं हगुनि जो विनंगं वनु दास
प्रौं विहसै मुसकाइ मुस्ति सों कहनि विलस
॥ ४ ॥ चित्त वत कित हनें कित हंकों ॥ पुलवेली

प्रलीनसौं प्रहिलानचलीपीयपासकौं वा
रवारसुसकाइ मूठहनुवेरिसांइसवीतिकौं व
हकाइकरिपरिहासकौं प्राइपियदिगधरें
नोवनगरूरिदेखैवैवठकविछोनासेनुसुंदर
प्रवासकौं वैठापुषमोरिटपचौहनम
सोरितवनवहावधानोंसुखरसवाविलास
कौं २५॥ विदिते विदिते ॥ प्रंचरभूषनचल
नसुधितिनकीकछुनसभार ॥ प्रलवेलीजो
धनगहेएविछिनिप्रकार ॥ २६ ॥ एकहाथवू

एकपादमैमसरीलीकटीकेकीनपरीपाक
रहीहोठछाड़है॥फेजरह्योकजरामंत्रतिन
गजरतिमुंदरजरानिकेसाजविसराइहै॥
अलकेंसवाराएहैंअंवरमुधारिसवदेखतेहै
नारिकहेनारघरवाइहै॥हाथीकोसोछेयांस
इजोलतिहैदेयायहकाहाअयोमैयायासैया
नकवप्राइहै॥२॥इतिहावहेजादस्रमास्र॥
अथविप्रलंभशृंगारवर्णनं॥विप्रलंभशृंगार
रवोंमुंदरदुविधवषानि॥विहुरिगयौपरदे

रतिहै हाहाहंसिदधिकहिमांनिहेतौ भलीजो
 नमानिहेतौ जानिहे किहांसायैकरतिहे अहे
 रहोदई प्रेसाभवहाकहांतेभईगौनेहनल
 ईलईकेसैकेपरतिहे ॥३४॥ स्थितिलक्षणं ॥

हवभावभावएतेतियकोरूपसिंगारवि
 छुरेतेजवसुभिराएसिमरतियहपरकार ॥

३५ ॥ कविता ॥ अघसरसलेतलजौहंसैनेनि
 चोंदीसीजौहभईजववै रतिरंगअनंगतरं
 गनिमैवुतसतसुनीवतियांतववै सुधिआ

वतसुंदरप्रैसाअनेकसुतोवसुजाइरहसबवै॥
नुरसौंमसकेरसकैवसकैचसकैजुलईससकै
अववै॥३५॥पुलकथनप्रविरहवाचिनिविषगुन
निकैकरियेजहांबधानताहासौंपहगुनकथ
नंसुंदरकरतसुजांन॥३७॥कुंदनकेतनकीतन
कछविताकतिहोसवैसुधिअपनैहननकीमु
जातिहैहाएसोतीमानिकअनारदनेदंगि
नाहसवैरदजवनेकुमुरिसुसिकतिहैसुंद
रनुसासलेतवाकेमुखवासकोसुफूलछोडि

जों रपोतिपासमडयतिहै ॥ रूपकनुजारी छिनु
 दिगतेनकीजैयार ॥ प्रैसाबहप्यारी सुविमारी
 केसैजातिहै ॥ ३२ ॥ चिंताककुं ॥ देव
 प्यारीसौदरसनमिलनकौननांतिकरिहोयु
 एसोचैजियमैजुयौ ॥ चिंताकहियेसो ॥ ३३ ॥
 केलेविचारविचारतजियमैहजारनहंउप
 चारवनायो ॥ सुंदरसोकुमिलैजुकहैयह्य
 चितचिंतहिमारमिथवौ ॥ प्रैसतौनागि
 हमारेकहांहैछवालीकीछानासौछानी

कुवावों हों प्रपनीइ न प्रांघिनिमों न प्राधिनेके
संके देख न पावों ४० तन प्र

वत न हं होत हे विरहे विधा क्य पीर तासो ज ता
कहत हं जे पंडित कविघोर ४१ तिय

देखे जालत वतें नई विहाल वात सुहात न मान
पुनिहाल ज्यो नरति हे अनिल हे धायो कि पौं प्र
निल हा धी ई प्राजा कालुते करे जो वां तं काल स
कर सिंहे चित्र में चिते शी हे कि सुंदर नु केरी दे
कि जंजार न जरी हे नु घरी सी नरति हे मोदन

नुसरेनांस चोकिपरतिहेयाहते नरोसोमोहि
जावेकोपरनुहे जाकोकांस
कलेसतेसुंदकखुनसुहाइभलावातजागोनु
रीसोमुद्देगसुभाइ ॥ ५३ ॥ इकतोकुलकानकरा
कवि सुंदरको किलकीदिनरातिरते ॥ ५४ ॥
इरहेनिसिकेचंद्रवटावतिहेजुविधाव
हते ॥ ५५ ॥ प्रवहोवहतानिहेवाचकसांनतूजांन
तिहेमनसासुइते ॥ ५६ ॥ नपसारिविसारिहेसारि
सवेघनसारनुसारउसारिइते ॥ ५७ ॥

काको प्रलाप ललितं । विरहका मकरि पारतै कहे
श्रानकी श्रानता सौं कहत प्रलापते जे कवि हैं स
ज्ञान ॥ ४५ ॥ कविता ॥ तारा इत नरुनी के मांग में
के मोती फले चंद्रमा मनों चंद्रमुखी को बदन है
बेलतें एषं जनते ललितों के लोच है चंपक
पतनु सो नाको सदनु है ॥ ३५ ॥ विरहें हैं रसों
ताके दाने यह देखियत सुंदरि पतजा मो दा
राके दरनु हैं मैं तो प्रग प्रग नाके प्राछें प्रव
लोकत हौं ते ऊ कह मोहि माडे माइत पदन

है। ध्यायाधिकारं। सुंदरवेदनमंदन
की तानें नुपजेपीर होइद्वरीतनतपे व्याधिक
है कविधीर। ध्यायाधिकारं। कुंदनसौतनुवृष
नानुन्दकी नंदनी कों चंपे कौसौ फूलपंचवों
ननिकौ वां नहै। समानता कौ जाकी नुपमां
नुप्रांन। संसारमें जानीयतसो भासुष
सुंदरनिदां नहै। राजनहै नुरपरमपयोधर
नुगलप्रेमसौ नहै तौ ना कौ प्रतिमुमेरको
सां नहै। सोई तवेनि सदिन कलनपरतछि

नसकनयोपियविनुजानोंपारीपानहै॥धध
नुन्मादलछिना॥देहा॥मिलिवेकीइछाकरैवै
ननिमेंलेनसादा॥विकलहोयथातपतिमेंसो
कहियेनुन्मादा॥धध॥कविज्ञा॥नुन्मादसांतीच
लेकाहूकेनंगहेंरहेजाइजानेंसोईकहैऐसा
बिफरतहै॥कैगईपारीपानीपानकेनहोतने
रेछिनकमेंसारीछिनुप्राणीसावरनतहै॥
थकीसीचकीसीजकीसीजकीजकरीसीप
करीसीसुंदरधरधरातधीरनधरतहै॥जा

छिन तैं छवाली के ली छत ई छन देखे ता छिन
ते जठके से छंदन करत है ॥५०॥ इति विप्रलंभ
सिं गारस माया ॥ अथ छेदा वचनं ॥ कविता
के संघरै रहत रुषाई माई निदुराई जां नौं कछु
जां नत न थोरी वे सवित ऐं आवत प्रचं भोय
ह सुंदर इती क प्रेसी काम की कहं तैं वा तैं घा
तैं सखा इत ए के सा है सथानी का ह कहं नैं
कु जां नी कि तैं वै ठि रहो आली आली आसस
इत ए ता रे न न मो रै द ग को र नि की आ र नि

सों देखो हो ऊचोरने से चोर चोरी चितना ॥१॥ पहिले हैं
गईनी का बात न लगइ लई में हं नो नी जला नई आजु
वत रात है ॥ सुंदर हू हसि कै चलाइ रस कथा कछू हंसि
हंसि राफिरा फि मु रि मु सकाति है ॥ ऐसे ति हरो नाम
जी नों हो जव हो पिय औरें रंग औरें रूप औरें नई भौ
ति है ॥ देवत हा सों हैं नई नैन गति रछों हैं वै फिरि गई
नु भों हैं ज्यों कमान फिरि जात है ॥१२॥ वान कसौ व
निकें प्रचान कही प्राइ करि हाई भाइ चाइ नकें
चित चोरिले गई ॥ प्रधर कपूर मृग मद कतरें गें

शोभे प्रंग प्रंग देखि सुधि सुंदर सवे गइ तिर छुधि
 ते कै नैन नती रसे चलाना रि लटकाइ घट नवा
 इ नै क नै गर्इ चलि पुरि सुसकाइ प्रंचरा कछु डु
 लाय छु तियां दिषाइ छे कछु तिया मै कै गर्इ ॥३॥
 सोहन सुंदर रंग भरि हे किधौ प्रति सौं धि सुधा सौं
 सुधारा ॥ चंचल ही सुचलै न हलै न हला हलषा
 एसी शाल सनारी ॥ घूमत ही ली रंगाली रसी
 ली छु विली किधौं मटसौं मतवारी ॥ प्राजु कि
 धौं कहं सांची कहौ इ न नैन निकां न्हु कुमारनि

हरी ५४ देखा जहां वह फोट मर निदूरि नें दोरत
 हीर सठाने प्राजु ही जाइ प्रगा कुमिले नुर प्रतर
 यों प्रप नाइ त आं नें सो कुहे सुंदर को कुइ नें स पु
 नावै ल्यों दो कुण दे करि जानें मोहि कहा सिध देत
 सखा देखिए प्रथियां सिध योई न मां नें ५५ नंद नें
 दन ठाटे हैं हार न एक हि सुंदर मंदिर क च सि के नि
 करी त व नानु ली ज ली नु प्र ली नि मि ली नु ग ली
 मै च ली ह सि के त व नें हरि के द ग ता र नि मां कि
 यों राघे को रूप र घो व सि के मां नों रा ल्यो हे सों

ने सों रंग प्रनंग सुनारि कसौ टनि में कसि कै ॥ ५६ ॥
जावन ज्यौं मथुरा में सुने हरि गहनितें तिय दौरि
करीसी ॥ जाज कौ छोडि ज्यौं दौरि दूत न मरि ते कू
टि चली च करीसी ॥ हलै न चले न टगा सी सवै वि
दुकी साधकी साज की ज करीसी ॥ देखत वा मधु
री मरति के कहि सुंदर मों करतें प करीसी ॥ ५७ ॥
अंडा इजं भाइत वहीते आइ सुदर वै वीर यों
न घाई वात वोलनि खगति है ॥ पावक से राते
नैन जावक सौ पुवा परें दाव कतें देह दूना दों

कनिदगतिहो॥प्रलिनेकेसाथकुंजगलिमेंजला
गईकलासाभिजाचलाहैहलेंनचलतिहै॥चि
नवनिकिधोंमूटिगईघरिनीठकान्हकीतो
डीठिमाईडीठिसीजगतिहो॥५॥कोहकोंदुरा
वतिहैहमेंवहरवतिहैकोंनकहनावतिहैरू
ठीसोंहैघातिहै॥

माइकेनमाइविनुवाहरेदरमेंपाइसासुरेसासुक
सांसमांमिवसियनुहैदेवकेकांनिजिननुपुरक
परेंधुनिचोरकीसीनाईतोअदहोंघसियनुहै॥
देखिवेकाहोंसहियेपरोंसतिसदंरहैबोलतहै
बोलगरेहोंमेंकसियनुहैंसुंदरकहंकेकांनका
सोंपहिचांनिजांनिकाकाकीसोंकहाजानोंके
संहसियनुहै॥६०॥गोरसलेचलामिलीआलि

निमें ग्वालिका आइ धरो नयो वाचि वाटमें वि
हर मांगत जगत कह सुंदर रिसान अति रूपी
भई जात सन रात देत गारी है ॥ भागै गई सखा स
व अके लो हेर ही जव प्यारे कह्यो जाहित ववो लि
हं सा प्यारी है ॥ जो रो दई आये जिन देव्यो भावै शो
रपनिका जै कह ज्ञा के जिये जगमें जिवारी है ॥
११॥ प्रलिनिके संग चली मिलि कुंज गली में क
लिनिकों हाथ चलायो ॥ हसी सखा सों जव आ
पुऊ हं हरि हेनु म

पतिको मिलने॥ कविता॥ परदेसते प्रातम सुंदर
शाये हुलास विलास वटे सगे॥ नुर कंठ लगा

इसई जलनांगहिमेढे अनंदसों अंकजरो ॥ तरकीहे
तनी दरकी अंगिया मनिमालनें दृष्टिके लालपरे
मांनों पीके मिले लियके हियतं विरहागनिके अं
गरानिके ॥ १५ ॥ रोमावली वर्णनं ॥ कां नृगहीव
षभानुसुताकी अचानकही अचराक किनारी
देखिरोमावलीरूपकी रासिरहे मनही मनरी
फिपुरारी ॥ परबबैरजे संकरकों कहिसुंदर अ
सा अनंगविचारी ॥ १६ ॥ ईसकेती सरें नैनमें दें नके
मातहुमें नसलाकसवारी ॥ १७ ॥ मांनों अंजुंगनी

कंजचटी मुखने पराकर हा श्रककेयों कारीमहा
सटकारी है सुंदर नाजिर ही मिलिसो हासों लकी
जटवाल ह कादिग और गई वटिके छवि शं नन
की यों श्रकबहे द एदूजी मकारी के हो न हं पेयन
का मुहरे ज्यों ॥ ६ ॥ नीवी वर्ये नं चिहुटा सों चुनि
नीके नं चिके निकट राघी न बेसी की नीवी छवि
कोटिक घरति है कसिवांधी डोरी राघी राघी का
सा पूंदा घोरी सुंदर गुलाब की कलासा विहरति
है सहज सों वातवा लवाटी कहें सधिनि सों ल

बेमें नमांसे जैसे घघरी करति है ॥ हंके हंउ ससिमा
वैहं कहे द्वकि जाइ ॥ हंसि परं ओचको नुदकि
सापरति है ॥ ७ ॥ सांरुसमें कौपछा हडी साकी उछा
हसौं प्रेसाल लाई निहारी ॥ चंदन कौं नगुलाल कि
तौ करताई रतोपल हंके निहारी ॥ तारेत हांदिग
चंदकला कवि सुंदर सो छवि एसा विचारी ॥ में न
मनो गटगोला गलोल निषे लनिषे लकौं वोलि
गलोल संवारी ॥ ८ ॥ फूला कुमोद निमोद में चंद
विनोद सौं सुंदर तारे हैं यौं ही ॥

चंद्रके प्रसन्निके करिस्तव त्पैं विधिना सितं प्र
वजानों अजलकै वनिव्यांतवना इत्सौं दिसए

पदरथीहैमानों ७० सुंदरवांनीयातेंकरिनर
वांनीहिमेलाईजेसेमगरसरीतिकेंसबहीमपु
त्रोजाई ७१ यदसुंदरसिंगारकीपोथारचादि
वारिचकोहोइकक्कहंनैसुकविमुगारि
७२ इतिश्रीमन्मन्त्रायनकविगजनिर्दिशेन
दरष्टंगारसंपूर्णोपिनाप्रादुपदयुक्त ७३
संवत् १८५५ विवाहाद्युगंश्रुतं १८५५ ७४

